Date - 04-05-2020

Dr. Sanehlata - 10
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. Snehababli 1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A.(Hons) - I

Topic - Path to liberation (Jainism)

Scanned with CamScanner

मोक्ष - प्राप्ति के मार्ग :- जैन दर्शन में त्रिरत्न अर्थात सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक चरित्र ये तीन मोक्ष प्राप्ति के मार्ग माने गये हैं। जैन दर्शन के ये त्रिरत्न साथ-साथ रहते हैं और तीनों सम्मिलित रूप में मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

उमास्वामी ने स्पष्ट कहा है -

"सम्यक् - दर्शन - ज्ञान - चारित्राणि मोक्ष - मार्गः"

सम्यक् दर्शन (Right faith) : जैन शास्त्रों में प्रतिपादित सिद्धान्तों एवं तत्वों के प्रति श्रद्धा की भावना ही सम्यक् दर्शन है।

सम्यक् ज्ञान (Right Knowledge) :- जैन दर्शन के सिद्धान्तों एवं तत्वों का यथार्थ ज्ञान ही सम्यक् ज्ञान है।

सम्यक चरित्र (Right Conduct) - यथार्थ ज्ञान के अनुसार आचरण करना अर्थात सद्कर्मों का सम्पादन एवं दुष्कर्मों का बहिष्कार ही सम्यक् चरित्र कहलाता है। दूसरे शब्दों में, अहितकारी कर्मों का परित्याग और हितकारी कर्मों का आचरण ही सम्यक् चरित्र है। सम्यक् चरित्र के लिए पंच समितियों,

Scanned with CamScanner

तीन गुप्तियों, पंच महाव्रतों, दस धर्मों आदि का पालन करना आवश्यक है।

पंच समितियाँ - समितियाँ कर्म को रोकने के पाँच बाहरी उपाय हैं। समितियाँ पाँच हैं - ईर्या, समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदान निक्षेपण समिति, प्रतिस्थापना समिति।

तीन गुप्तियाँ - कर्म और आत्मा के योग को रोकने को गुप्ति कहते हैं। गुप्ति के तीन भेद हैं- काय, गुप्ति, वाक् गुप्ति और मनो गुप्ति।

पंच महाव्रत - महाव्रत पाँच हैं - अहिंसा (Non-violence), सत्य (Truth), अस्तेय (Non-stealing), ब्रह्मचर्य (Celebacy), अपरिग्रह (Renunciation)। जैन दर्शन में इन व्रतों के दो रूप हैं। महाव्रत का विधान जैन सन्यासियों के लिये है। यहाँ इन व्रतों के पालन में कुछ छूट दी गई है।

दस धर्म - क्षमा, मृदुता, सरलता, शौच, सत्य, संयम तप, त्याग, विरक्ति ब्रह्मचर्य।

इसके अतिरिक्त बाइस भी परीषह एवं पाँच प्रकार के चरित्रों का भी पालन करना होता है।

Scanned with CamScanner

उपरोक्त मार्ग के अनुसरण करने से जीव अपनी स्वभाविक स्थिति में आ जाता है। मुमुक्षु के मोक्ष तक पहुँचने के साधना-पथ के चौदह सोपान हैं, जिन्हें 'गुण-स्थान' कहा जाता है। चौदहवें सोपान में आत्मा केवली (विदेह-मुक्ति से सदृश्य) अपने शुद्ध स्वरूप में स्थापित हो जाता है। वह अनन्त चतुष्टय से युक्त हो जाता है। उसके सभी प्रकार के कर्मों का पूर्ण क्षय हो जाता है। यही मोक्ष है। (कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः) यही केवल-ज्ञान की प्राप्ति है।

महत्व : जैन दर्शन बिना ईश्वर आदि की सहायता के मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। यह मनुष्य को स्वावलंबी बनाता है।

Scanned with CamScanner